वहाबी मत का सत्य

लेखक :— आयतुल्लाहिल उज़मा सय्यदुल उलमा मौलाना सै0 अली नक़ी नक़वी

किस्त : 4 सम्पादन : नूरे हिदायत फाउन्डेशन

और सिहाह (हदीस के छः संकलन जो अहले सुन्नत में 'सहीह'/प्रमाणित माने जाते है) की हदीसों से साबित है कि जिसने रसूल[स0] को सपने में देखा उसने हज़रत[स] ही को देखा क्योंकि शैतान हज़रत[स] की सूरत में नहीं आ सकता। इससे यात्रा करना रसूल[स] की कब्र की ज़ियारत के लिए खुद रसूल[स] का आदेश साबित हो जाता है जिससे इन्कार नहीं किया जा सकता है।

इब्ने अब्दुल वहाब ने इस बात को भी अपने पहले वाले इब्ने तैयमिया व इब्ने क़य्यिम से लिया है कि इन दोनों ने सबसे पहले यह आवाज़ उठाई और इसे साबित करने में बड़ी लम्बी बात (खींचा तानी) से काम लिया और इस्लाम के उलमा ने उसकी काट में पूरी—पूरी किताबें लिखीं जैसे "षफ़ाउस सिक़ाम फ़ी ज़ियारति खयरिल अनाम" जो आठवीं सदी हि0 क़ाज़ियुल क़ुज़ात हाफ़िज़ तकीउद्दीन हसन सबकी की लिखी है और अल्लामा इब्ने हजर मक्की की "जौहरु मुनज़्ज़म फ़ी ज़ियारति क़ब्रि नबी इल मुकर्रम", मुफ़्ती सदरूद्दीन ने "मुनतहियुल मक़ाल ''फी शर्हि हदीसे ला शहिदल रिहाल'' तथा सैय्यद मुस्तफा नूरुद्दीन अलहुसैनी की ''खुलासतुल मिक़ाल फी शद्दिल रिहाल'' आदि।

यहाँ कुछ उन किताबों की पक्तियाँ और कुछ दूसरे उलमा के कथन जो दूसरी किताबों में इस विषय पर हैं लिखे जाते हैं।

अल्लामा सबकी ने अपनी किताब की पूर्व प्रस्तावना में लिखा है कि "अल्लाह से करीब (निकट) होने वाले कार्यो में सबसे अच्छा कार्य हज़रत सरवरे काएनात[स] (सृष्टि प्रमुख) की क़ब्र की ज़ियारत है और दुनिया के कोने कोने से उसके लिए यात्रा है जैसे कि समस्त मुसलमानों में सालों साल (शताब्दियों) से होता चला आता है और उन बातों में जो शैतान ने इस समय के कुछ अभागों की ज़बान से निकाली है इसमें शक को जन्म देना है। और यह आशंका उनके दिल में कदापि नहीं आ सकती जो सच्चे मुसलमान हैं और यह एक वस्वसा (भ्रम) है एक ऐसे अभागे का पैदा किया हुआ जिसका पाप उस पर आएगा और उस पर वही आदेष लागू होंगे जो अल्लाह ने साफ तौर पर ऐसे ही व्यक्ति के लिए लागू किए हैं और गलत आशंकाएं समाप्त होकर रहती हैं। दूसरी जगह इसी किताब में लिखते हैं

"इब्ने तैयमिया के पास इसका कोई तर्क नहीं और दीनी कानून और अस्लाफ़े सालेहीन (अच्छे नेक पहले के व्यक्तियों) के जीवन से पता चलता है कि वह बहुत से अच्छे कर्म करने वाले लोगों की क़ब्रों को बरकत वाला समझते रहे हैं जबकि कहाँ नबियों और रसूलों की क़ब्रें, जो यह दावा करें कि नबियों और मुसलमानों की क़ब्रें बराबर हैं उसने बहुत बड़ी ग़लती की और ग़लत दावा किया जिसके गलत होने का हमें निश्चय है और इसमें रसूल[स0] के मरतबे ख़्याल को साधारण मुसलमानों की सतह तक घटाना है और यह बिना किसी शक के कुफ्र है। इसलिए कि जो रसूल[स] के मरतबे (कोटि) को उनके स्थान से गिराए वह काफ़िर है और अगर वह कहे कि यह गिराना नहीं है बल्कि उनके ठीक स्थान से उनकी महानता को बढ़ाने से रोकना है तो यह भी अज्ञानता और गुस्ताख़ी है। और हमें निश्चित विष्वास है कि पैग़म्बर[स] इससे भी कहीं अधिक आदर के पात्र हैं जीवन में भी और अपनी मृत्यु के बाद भी और इसमें शक नहीं कर सकता वह जिसके दिल में थोड़ा भी ईमान हो।"

अल्लामा इब्ने हजर जौहरे मुनज़्जम में लिखते हैं: "अगर तुम कहो कि हम पाक क़ब्र की ज़ियारत और उसके लिए यात्रा के धर्म शास्त्र के सही होने पर इजमा (एक राय) कैसे मान सकते हैं जबकि हम्बली गिरोह में से इब्ने तैयमिया इन सब बातों धर्मोचित होने के ख़िलाफ़ है जैसा कि सबकी ने लिखा और कहा है कि इब्ने तैयमिया ने इस पर बहुत लम्बा तर्क दिया है बल्कि उन्होंने यह दावा किया है कि इस ज़ियारत के लिए भाग इजमा से हराम है। और इसमें नमाज़कस्र नहीं होगी और जितनी हदीसें इसके महत्व में हैं सब गलत हैं और बाद में भी कुछ उलमा इस बात पर चले हैं तो मैं कहूँगा कि इब्ने तैयमिया कौन है जिसकी ओर देखा जाए और धर्म के मामले में से किसी में भी उस पर भरोसा किए जाए, और वह तो, जैसा कि एक जत्थे ने जैसे ग़र बिन जमाअ ने उसकी बातों की और बेकार तर्कों की समीक्षा की और उसकी झूठी बातों और गलितयों को उजागर किया है, एक ऐसा व्यक्ति है जिसे अल्लाह ने भटके हुओं में पहुचा दिया है, उसे अपमान और रुसवाई की चादर ओढ़ाई है और बरबाद होने के लायक बनाया है और बहुत अधिक झूठी और ग़लत बातों से उसने अपने लिए वह स्थान बनाया है जो उसके अल्लाह की रहमत से दूर होने का कारण है और शेख़उलइस्लाम तक़ी सबकी ने जिनकी बड़ाई, कठिन परिश्रम, और परहेज़गारी (संयम) मानी हुई है उसकी काट में एक किताब लिखी और उसमें मज़बूत तर्क से सही मार्ग को उजागर किया है।"

मुफ़्ती सदरूद्दीन ने "मुनतहियुल मक़ाल" में लिखा है कि:"बड़े आलिम मुहाद्दिसों (हदीस के विद्वानों) के प्रमाणाधार शेख मुहम्मद बरसी ने अपनी किताब ''इत्तिहाफ़ु अहलिल इरफान बरुयतिल अबियाइ वल मलाइकति वलजान्''में लिखा है कि इब्ने तैयमिया हम्बली ने दुस्साहस से काम लिया और दावा किया है कि हज़रत[स] की क़ब्र पाक की ज़यारत के लिए यात्रा हराम (निबद्व) है और यह कि नमाज़ इस यात्रा में क़स्र न होगी इसलिए कि यह यात्रा पाप है और इसमें उसने बड़ी लम्बी बात से काम लिया जिसके सुनने से कान नकारते हैं और मन (स्वभाव) उबते हैं। इस बात की नहूसत (अशुभ) उसके साथ रही यहाँ तक कि उसका दुस्साहस अल्लाह तक पहुँचा और उसने अल्लाह की मर्यादा के पर्दे को फाड़ा और ऐसी बातों के साबित करने की कोषिष की जो उसकी महानता,मर्यादा और शान के विपरीत हैं कि खुदा के लिए दिषा, और शरीर का दावा किया और जो इसे न माने उसे भटका हुआ और पापी कहा और इसका मिम्बरों पर एलान किया और इसका चर्चा चारों ओर फैला और उलमा मुजतहिद कि जो इससे पहले हुए हैं बहुत से मसलों में उनके ख़िलाफ़ हुआ और ख़ुलफाए राषेदीन पर (चारों खलीफा पर) लच्चर इतराज़ किए जिसका परिणाम यह हुआ कि वह उस समय के सब उलमा की नज़र से गिर गया और आम खास सबने उस पर उंगली उठाई और उलमा ने उसकी गलत बातों की जाँच की उसके तर्क की काट की और उसकी अटकल परिच्चियों और गलितयों को उजागर किया।"

अहमद बिन शहाबुद्दीन ख़िफ़ाजी ने "नसीमुर्रियाज़" में रसूल[स०] की इस हदीस के लिखने के बाद कि "अल्लाह लानत करे यहूदियों और ईसाईयों पर कि उन्होंने अपने नबियों की क़ब्रों को सजदा करने का स्थान पूजास्थलों बना दिया" लिखा है:

"पता होना चाहिए कि इस हदीस की वजह से इब्ने तैयमिया और उसके अनुयायियों जैसे इब्ने कय्युम ने अपना वह विश्व कुख्यात विचार खड़ा किया जिसकी वजह से सब ने उन्हें काफ़िर कहा और सबकी ने एक किताब उस पर लिखी और वह रसूल[स०] की कब्र की ज़ियारत और उसके लिए यात्रा को हराम (निशिद्ध) कहता है उन्होंने अपने विचार में तौहीद के पहलू की रखवाली की ऐसी व्यर्थ बातों के साथ जिनका कहना भी ठीक नहीं है क्योंकि वह किसी अक़ल वाले की ज़बान पर भी नहीं आ सकती, न कि किसी विद्वान की ज़ुबान पर।"

जारी ....